राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर कथक पाठ्यक्रम अंकविभाजन

MARKING SCHEME OF SCHOOL LEVEL

Vid Diploma in performing art- (V.D.P.A.)

2021-22 (Regular)

Previous

PAPER	SUBJECT - Kathak	MAX	MIN
1	Theory - I History and Development of Indian dance	100	33
2	Theory - IIEssay composition, rhythmic pattern and principles of practical	100	33
2	PRACTICAL - Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	300	99

स्कूलस्तर के पाठ्यक्रम
नियमित विद्यार्थियों हेतु
विद डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–प्रथमवर्ष
कथक नृत्य
शास्त्र –प्रथम प्रश्नपत्र

समयः– 3 घण्टे **पूर्णांक–100**

1. कथक नृत्य का क्रमिक विकास एवं उसके विभिन्न घरानों का संक्षिप्त अध्ययन।
2. रस एवं भाव के प्रकारों का संक्षिप्त ज्ञान।
3. नृत्य से संबंधित किन्हीं दो धार्मिक कथाओं का ज्ञान।
4. रास नृत्य का परिचयात्मक ज्ञान एव कथक नृत्य से उसके सम्बन्ध की जानकारी।
5. क्षेत्रीय लोक नृत्यों का संक्षिप्त अध्ययन।
6. निम्नलिखित दो प्रकार की शास्त्रीय नृत्य शैलियों का परिचयात्मक ज्ञान। भरतनाट्यम, कथक, मणिपुरी, एवं कथकली।
7. अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त हस्तमुद्राओं का लक्षण विनियोग सहित अध्ययन।

शास्त्र –द्वितीय प्रश्नपत्र

समयः– 3 घण्टे **पूर्णांकः–100**

1. ताल के दस प्राण का अध्ययन।
2. कथक नृत्य म मंगलाचरण, गुरूवंदना एवं भूमिवंदना का महत्व।
3. उत्तरभारतीय ताल पद्धति का ज्ञान एवं प्रायोगिक पाठ्यक्रम में उल्लेखित तालों कें ठेके एवं तोड़े, परन, आदि को लिपिबद्ध करने का अभ्यास।
4. नाट्यशास्त्र के अनुसार 'भृकुटीभेद' का श्लोक सहित अध्ययन।
5. कथकनृत्य को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित विषयों काज्ञानः

   (अ) वेशभूषा एवं रूपसज्जा। (स) प्रकाश व्यवस्था।

   (ब) रंगमंच व्यवस्था। (द) वृन्दवादन (पार्श्व संगीत)

6. पं. बिरजू महाराज, विदुषी सितारा देवी एव विदुषी रोशनकुमारी की जीवनी एवं कथकनृत्य में उनका योगदान।

विद डिप्लोमा इन परफॉर्मिंगआर्ट–प्रथमवर्ष

कथकनृत्य

प्रायोगिक

पूर्णांकः–100

1. विष्णुवंदना या शिववंदना से संबंधित श्लोक में भाव प्रदर्शन।

2. कसक, मसक एवं कटाक्ष के साथ ठाठप्रदर्शन का अभ्यास।

3. त्रिताल में एक आमद, तीन तोड़े, दोपरन, दो चक्करदार परन, दो कवित्त एवं तत्कार का नृत्य प्रदर्शन।

4. पूर्व में सीख गये गतनिकासों के अतिरिक्त बिंदिया गतनिकास का प्रदर्शन।

5. माखन चोरी गत–भाव का प्रदर्शन।

6. चौताल (12–मात्रा) एवं एक ताल (12–मात्रा) का ज्ञान तथ इन में से किसी एक ताल में निम्नानुसार नृत्य करने का अभ्यास :–ठाठ, आमद, दो तोड़े, दो परन, एक चक्करदार तोड़ा, एक चक्करदार परन, एवं एक कवित्त।

7. किसी एक भजन पर भाव प्रदर्शन।

आंतरीक मूल्यांकन

आवश्यक निर्देश–: आंतरीकमूल्यांकनके अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय फाईल प्रस्तुत करनी होगी।कक्षा में सीखे गये रागो की स्वरलिपि/तोड़ो का विवरण

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर कथक पाठ्यक्रम अंकविभाजन

MARKING SCHEME OF SCHOOL LEVEL

Vid Diploma in performing art- (V.D.P.A.)

2021-22 (Regular)

Final

PAPER	SUBJECT - Kathak	MAX	MIN
1	Theory - I History and Development of Indian dance	100	33
2	Theory - II Essay composition, rhythmic pattern and principles of practical	100	33
3	PRACTICAL - Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	300	99

स्कूलस्तर के पाठ्यक्रम
नियमित विद्यार्थियों हेतु
विद डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिमवर्ष

कथकनृत्य

शास्त्र –प्रथमप्रश्नपत्र

समयः– 3 घन्टे

पूर्णांकः–100

1. निम्नलिखित शास्त्रीय नृत्यों का परिचयात्मक ज्ञानः–

   ओड़िसी, कुचिपुड़ी, एवं मोहिनीअट्टम।

2. कथक नृत्य प्रशिक्षण में गुरू–शिष्य परम्परा एवं उनकी शिक्षण पद्धति का अध्ययन।

3. अष्ट नायिकाओं का अध्ययन।

4. चार प्रकार के नायकों का ज्ञान।

5. मार्गी एवं देशी नृत्यों की जानकारी।

6. भारत के लोक नृत्यों की संक्षिप्त जानकारी।

7. निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का ज्ञान :–

   आड़, कुआड़, जाति, चारी, स्थानक भेद, पाद भेद।

विद डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिमवर्ष

कथक नृत्य

शास्त्र –द्वितीय प्रश्नपत्र

समयः– 3 घन्टे **पूर्णांक–100**

1. कथक नृत्य के विभिन्न घरानों– लखनऊ, जयपुर एवं बनारस का परिचय एवं उनकी शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन।
2. नृत्त, नाट्य एवं नृत्य का ज्ञान।
3. अभिनय दर्पण में वर्णित विभिन्न विषय वस्तुओं का संक्षिप्त अध्ययन।
4. कथक नृत्य प्रदर्शन के वस्तु क्रमकास विस्तार विवरण ।
5. निम्नलिखित विषय वस्तुओं का अध्ययन।

(अ) कथक नृत्य की वेशभूषा का प्राचीन एवं आधुनिक स्वरूप।

(ब) कथक नृत्य में सह कलाकारों की भूमिका।

(स) कथक नृत्य का काव्य पक्ष।

6. लय, ताल, एवं अभिनय का ज्ञान।
7. धमार (14–मात्रा)' एवं रूपक (7–मात्रा) तालों के ठेके एवं उनकी ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन लिपिबद्ध करने का अभ्यास।
8. उपर्युक्त तालों में सीखे गये बोल लिपिबद्ध करने की क्षमता।

विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिमवर्ष

कथक नृत्य

प्रायोगिक

पूर्णांकः– 100

1. सरस्वती वंदना अथवा गणेश वंदना से संबंधित श्लोक में भाव प्रदर्शन।

2. ठाठ का विशिष्ट प्रदर्शन।

3. त्रिताल में पूर्व की कक्षाओं में सीखे गये बोलों के अतिरिक्त निम्नानुसार नृत्य करने का अभ्यास :–

एक आमद, तीन तोड़े, दो परन, दो चक्करदार तोड़े, दो चक्करदार परन, एक तिस्त्र, एवं एक मिश्र जाति का तोड़ा या परन, दो कवित्त एवं विविध प्रकार की तिहाईयां।

4. विभिन्न प्रकार के तत्कार एवं लयबाँट काप्रदर्शन।

5. पाँच गतनिकासों का प्रदर्शन :–

रूखसार, बिंदिया, मुरली, मटकी व ठाठ ।

6. गतभाव का अभ्यास–होली एवं गोवर्धन पूजा ।

7. धमार (14–मात्रा) अथवा रूपक (7–मात्रा) में निम्नानुसार नृत्य करने का अभ्यास–थाट, एक आमद, द तोड़े, दो परन, दो चक्करदार तोड़े या परन एवं कवित्त।

8. एक भजन और ठुमरी में भाव प्रदर्शन।

सदर्भितपुस्तकें :–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परम्परा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक नृत्य शिक्षा भाग दो (डॉ. पुरू दधीच)
3. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग)
4. नटवरी नृत्य माला (गुरू विकम)
5. कथक मध्यमा(डॉ. भगवानदास माणिक)

आंतरीक मूल्यांकन

आवश्यक निर्देश–: आंतरीकमूल्यांकनके अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

कक्षा में सीखे गये रागो की स्वरलिपि/तोड़ो का विवरण